सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-30 अंक-1 7 से 21 जनवरी, 2015 मुख्य संपादक - कृष्ण चक्रवर्ती E-mail :sarvaharadrishtikon@gmail.com मूल्य : 2 रुपये

स्वास्थ्य मद में बजट आवंटन में 20 प्रतिशत कटौती

मीठी-मीठी बातों की आड़ में जनजीवन पर बीजेपी का हमला

सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 24 दिसम्बर, 2014 को जारी एक बयान में केन्द्र की मोदी सरकार के हालिया सर्वनाशकारी फैसले का तीव्र विरोध किया है जिसमें वर्ष 2014-15 के लिए पासशुदा स्वास्थ्य बजट आवंटन में 20 प्रतिशत की कटौती की गई है, जो निस्संदेह एक घोर जनविरोधी कदम है और आम आदमी पर एक भयंकर हमला है। कॉमरेड प्रभाष घोष ने कहा कि आम आदमी पहले ही किसी भी तरह की चिकित्सा सहायता और जीवनरक्षक दवाओं से महरूम रहने की वजह से कुत्ते-बिल्लियों की तरह बेइलाज मर रहे हैं।

दो महीने पहले 108 महत्वपूर्ण आवश्यक दवाइयों की कीमतों को नियंत्रणमुक्त कर दिये जाने के तुरंत बाद उठाया गया यह कदम हमारे बीमारीग्रस्त, आपदा प्रभावित, कुपोषित देशवासियों पर एक घातक प्रहार है, जो स्वास्थ्य सेवाओं के आधारभूत ढाँचे की कमी और दवाओं, विशेषकर जीवनरक्षक दवाओं की कम आपूर्ति की वजह से साधारण बीमारियों, जिनकी रोकथाम हो सकती उन बीमारियों और छूत की बीमारियों के सहज शिकार हो रहे हैं क्योंकि स्वास्थ्य सेवाओं के लिए सरकार द्वारा सकल घरेलू उत्पाद का 1 प्रतिशत से भी कम खर्च किया जाता है जो दुनिया में सबसे कम है।

जहाँ सरकार का रक्षा बजट असामान्य रूप से अधिक है और साल दर साल बढ़ता जा रहा है, आधुनिक सामरिक अस्त्र-शस्त्रों पर खर्च लगातार बढ़ता जा रहा है, मंत्रियों, सांसदों, अफसरशाहों की विलासतापूर्ण सुख-सुविधाओं के लिए खर्चों में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही है, वहीं स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, ईंधन आदि आवश्यक क्षेत्रों के लिए बजट की ऐसी निर्मम कटौती एक के बाद एक आई सभी केन्द्रीय सरकारों द्वारा थोपी गई हैं और इस प्रकार मोदी सरकार के 'अच्छे दिन' लाने के झांसे का भी प्रर्दाफाश हो गया है।

हम देश के लोगों का आह्वान करते हैं कि इस घृणित कदम का प्रतिवाद करें, इस तिकड़मबाजी को परास्त करने के लिए आगे आयें और इसके खिलाफ जोरदार आन्दोलन गठित करें।

कृषि भूमि अधिग्रहण के काले अध्यादेश का कड़ा विरोध

भूमि अधिग्रहण पर बीजेपी-नीत केन्द्र सरकार के अध्यादेश पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 30 दिसम्बर, 2014 को जारी एक बयान में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने कहा :

''विकास के नाम पर, भूमि अधिग्रहण पर यह अध्यादेश देशी-विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, खास कर उन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हित में जो रियल एस्टेट कारोबार में बहुत बड़ा निवेश करना चाहती हैं, किसानों से उनकी जमीन छीनने के लिए एक घिनौनी नीति है। इस अध्यादेश के परिणामस्वरूप लाखों गरीब और मध्यम किसान अपनी जमीनों से उजड़ जायेंगे और गलियों के भिखारियों की संख्या बढ़ायेंगे। हम मोदी सरकार के इस काले अध्यादेश का कड़ा विरोध करते हैं और इसे तुरंत वापस लेने की मांग करते हैं। हम देश के जनवादी सोच वाले लोगों का आह्वान करते हैं कि इसके खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करें।''

भौतिक जगत पर रोशनी डालता है, इसके अन्तर्निहित नियम उद्घाटित करता है और पथ प्रदर्शित करता है असल विज्ञान —— कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

(यह संदेश एस.यू.सी.आई.(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ने 17 से 19 अक्टूबर, 2014 को ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी द्वारा बंगलुरु में आयोजित ऑल इण्डिया सांइस कांफ्रेंस को भेजा था।)

प्रिय अध्यक्ष और ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी की काउन्सिल के नव निर्वाचित सदस्यगण,

आपकी ऐतिहासिक साइंस कांफ्रेन्स में मौजूद रहने की मेरी हार्दिक इच्छा थी, पर दुर्भाग्यवश मैं अचानक तेज वायरल फीवर से पीड़ित हो गया और मुझे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। अभी तक यह निश्चित नहीं है कि मुझे अस्पताल से कब छुट्टी मिलेगी, इसलिए यह लिखित संदेश भेज रहा हूँ।

साइंस कांफ्रेंस जो आपने जाने-माने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, विज्ञान के छात्रों और विज्ञान में रुचि रखने वाले लोगों को लेकर आयोजित की है और ऐसी एक कांफ्रेन्स जिसका उद्देश्य विज्ञान को सही-सही अमल में लाना, वैज्ञानिक नजरिए और चिन्तन पद्धति को विकसित करना और मानवीय मूल्यों को पनपाना है जिसका रास्ता केवल विज्ञान ही हमें दिखा सकता है, निस्संदेह यह एक अनुपम कार्य है।

निस्संदेह यह एक उत्तम प्रयास है, ऐसे एक समय जब सही वैज्ञानिक सोच, अध्ययन के तरीके और उच्च मानवीय मूल्यों को पनपाना न केवल हमारे देश में बल्कि समूचे संसार में दुर्लभ हो चुका है। मैं यह कहने को मजबूर हूँ कि ये गुण उन लोगों में भी मुश्किल से ढूँढ़ने पर ही मिलते हैं जो विज्ञान के गहन अध्ययन में लगे हुए हैं। स्वाभाविक रूप से यह एक उत्तम संघर्ष है, लेकिन साथ ही साथ एक बहुत बड़ी चुनौती भी है।

आप आधुनिक विज्ञान के विकास का इतिहास जानते हैं। यह 15वीं शताब्दी के मध्य में कोपरनिकस के साथ शुरू हुआ। विज्ञान को बहुत प्रतिकूल माहौल में विकास करना पड़ा जब जिओरडनो ब्रूनो को जिन्दा जला दिया गया क्योंकि वे विज्ञान की साधना में लगे हुए थे और स्थापित धार्मिक विश्वासों के खिलाफ लड़ रहे थे। लगभग गैलिलियो का भी वही हश्र हुआ जिन्हें धर्माधिकारियों की जाँच का सामना करना पड़ा। अब तक दुनिया का कोई भी महान संघर्ष अनुकूल परिस्थितियों में विकसित नहीं हुआ। इसे सत्ताधारी वर्ग और अतिरूढ़िवादी धार्मिक मुखियाओं के सख्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ा जो विज्ञान से डरते थे। जीवन की सामंती परिस्थितियों में बहुसंख्यक लोग व्यापक पैमाने पर पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों और दकियानूसी विचारों के शिकार थे। अंधविश्वास न केवल उन दिनों संघर्ष में बहुत बड़ी बाधा था बल्कि वर्तमान में भी बहुत बड़ी रुकावट है। बुर्जुआ वर्ग जो पूँजीवाद के विकास के दौर में सामाजिक उत्पादन बढ़ाने के लिए लड़ा और उसके लिए उसे विज्ञानों के विकास के लिए लड़ना पड़ा, आज वही बुर्जुआ वर्ग बाजार की कमी की वजह से अतिउत्पादन के दौर में विज्ञान से डरता है। इसीलिए, आज भी समाज का सबसे ज्यादा शक्तिशाली तबका अर्थात् बुर्जुआ वर्ग जो शासक है, विज्ञान का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्यों? इसलिए कि विज्ञान सच्चाई बताता है। विज्ञान दिखाता है कि हर चीज बदलती है और इसमें मात्रात्मक से गुणात्मक, निम्नतर से उच्चतर की ओर परिवर्तन होता है। आपको सदा याद रखना चाहिए कि इस भौतिक जगत में कुछ भी स्थाई नहीं है, कुछ भी शाश्वत नहीं है और कुछ भी सम्पूर्ण नहीं है। बेशक एक विशेष समय में किसी चीज के विकास की एक उच्चतम दशा होती है। पर समय में परिवर्तन के साथ-साथ यह अपर्याप्त और अपूर्ण हो जाती है। परिवर्तन और विकास के क्रम में यह अपने क्रान्तिबिन्दु पर पहुँचती है। फिर इसमें आमूल परिवर्तन हो जाता है। कोई भी परिघटना इस

(शेष पृष्ठ 2 पर)

फिलस्तीन को सहायता बंद करने के भाजपा सरकार के फैसले की एसयूसीआई (सी) ने की भर्त्सना

भाजपा सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में फिलस्तीन को सहायता बंद करने के कथित कदम की सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया(कम्युनिस्ट) कठोर शब्दों में भर्त्सना करती है। ठीक आजादी के बाद से ही एक पर एक आई भारत की हर सरकार भारतवासियों की साम्राज्यवाद-विरोधी व फिलस्तीनपरस्त जोरदार भावनाओं के दबाव में फिलस्तीन को सहायता प्रदान करती आ रही है। परन्तु अब भारत की पूँजीवादी सरकार अपनी साम्राज्यवादी चाह के अनुरूप अमेरिकी साम्राज्यवाद के साथ पहले से भी ज्यादा नजदीकी रिश्ता बना रही है और अमेरिका व इसके सहयोगियों के साथ घनिष्ठ राजनैतिक, कूटनीतिक और सामरिक गठबंधन कायम कर रही है। इस योजना के तहत सरकार अमेरिका के घनिष्ठ सहयोगी इजरायल के साथ भी दोस्ताना सम्पर्क और सैन्य गठबंधन की ओर मुड़ रही है जो फिलस्तीनी जनता के अधिकारों को बर्बरता से कुचल रहा है और अनगिनत फिलस्तीनियों की हत्या का दोषी है। यह साम्राज्यवादपरस्त रवैया ही है जो फिलस्तीन को सहायता प्रदान करने की पूर्ववर्ती नीति के उलट सरकार के इस कथित निर्णय से प्रकट हो रहा है। एसयूसीआई(सी) इस निर्णय का कड़ा विरोध करती है। यह जनभावनाओं के विरुद्ध है। हम देश की जनता से अपील करते हैं कि वे जोरदार ढंग से सरकार से यह मांग करें कि फिलस्तीन के हित-उद्देश्यों के लिए दी जा रही सहायता बंद करने की साम्राज्यपरस्त नीति अपनाने से बाज आये।

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

प्रक्रिया का उल्लंघन नहीं कर सकती है। पूँजीपति वर्ग भी जानता है कि पूँजीवाद को भी जाना होगा। इस सच्चाई से वह बहुत डरता है।

एक प्रचलित कहावत है और पढ़े-लिखे तबके के लोगों में भी एक शातिराना प्रचार की वजह से विश्वास है कि विज्ञान भौतिक सुख दे सकता है, पर मन की शान्ति या चैन नहीं दे सकता है। पर यदि आप इस अभिप्रेरित प्रचार या अज्ञानियों के विश्वास का विश्लेषण करें तो आपको साफ पता चल जाएगा कि कोई भी चीज इससे ज्यादा खतरनाक रूप से गुमराह करने वाली और भ्रामक नहीं हो सकती। सच्चाई तो यह है कि आदमी को मन की शान्ति केवल तभी मिलती है जब उसे सच का पता चलता है। लेकिन किस का सच?

भौतिक जगत का सच। भौतिक जगत के सच का क्या अर्थ है? भौतिक जगत का अर्थ है प्रकृति, समाज और विचार अपने सह सम्बन्धों और समन्वयनों में।

विज्ञान की तमाम शाखाओं ने संदेहातीत रूप में यह सिद्ध कर दिया है कि प्रकृति असीम है और अनन्तकाल तक बदलती और विकसित होती रहेगी। प्रकृति के परे किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं है। इसलिए कुछ भी अतिप्राकृत नहीं है। पुनः, यह भौतिक जगत वस्तुगत नियमों से संचालित होता है। यह भैतिक जगत मानव चेतना से स्वतंत्र रूप से विद्यमान था, विद्यमान है और विद्यमान रहेगा। तब भी जब मनुष्य पैदा ही नहीं हुआ था प्रकृति विद्यमान थी और वस्तुगत नियमों द्वारा संचालित होती थी। मनुष्य ने शुरू से ही भौतिक जगत को समझने का प्रयास किया, तब भी जब वह आदिम समाज में था और उसका चिन्तन भी आदिम था। लाखों वर्षों के संघर्ष के क्रम में भौतिक जगत और इसकी वास्तविकता को जानने के लिए मनुष्य के हाथ में एक उपकरण आया विज्ञान और वह पद्धति है निरीक्षण, परीक्षण, पड़ताल के आधार पर किसी भी चीज का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण करना।

पहली बात विज्ञान किसी भी चीज को तब तक सत्य नहीं मानता जब तक कि इसको वैज्ञानिक तरीके से जाँचा-परखा न गया हो। दूसरे, विज्ञान मानता है कि यह भौतिक जगत वस्तुगत नियमों से संचालित है। यह वास्तविक भौतिक जगत वस्तुपरक नियमों से संचालित है का मायने है कि विज्ञान का मानना है कि इन नियमों का अस्तित्व मनुष्य के चाहने या न चाहने की वजह से नहीं है। तीसरे, इसका मानना है कि इन वस्तुपरक नियमों को विश्लेषण की प्रक्रिया यानी निरीक्षण, परीक्षण और पड़ताल का अनुसरण करके ही जाना जा सकता है, अन्य किसी तरीके से नहीं।

जो लोग ऐसा सोचते हैं कि विज्ञान मन को शान्ति नहीं दे सकता है, वे सच्चाई को जानने के लिए कौन सी प्रक्रिया अपनाते हैं? सच्चाई यह है कि उनके पास सच जानने का कोई तरीका नहीं है। वे अंधतापूर्वक महापुरुषों की कही हुई बातों या भविष्यवाणियों पर विश्वास करते हैं। लेकिन कोई आदमी कितना भी महान क्यों न हो, वह सिर्फ साधना, भक्ति या 'दैविक शक्ति' के द्वारा सत्य को नहीं जान सकता है और उनके परिणामों को शायद ही प्रमाणित और सत्यापित किया जा सकता है।

दोस्तो, आप यह कभी न भूलें कि केवल सच ही मन की शान्ति और चैन दे सकता है और समाज में न्याय को स्थापित कर सकता है। जो लोग सोचते हैं कि विज्ञान मन का चैन नहीं दे सकता है, वे भी विज्ञान पढ़ते हैं लेकिन किसी दैविक शक्ति में भी विश्वास करते हैं। इसलिए आप विज्ञान के ऐसे बहुत से प्राध्यापकों से विश्वविद्यालय में मिलेंगे जो माथे पर तिलक या सिंदूर लगाते हैं और तिरूपति में अपना सिर मुण्डवाते हैं। हालांकि वे सब ऐसा सचेतन रूप से नहीं करते, फिर भी यह एक पाखण्ड है। विज्ञान की सभी शाखाओं ने दिखाया है कि प्रकृति से परे कुछ भी विद्यमान नहीं होता है, हर चीज प्रकृति का हिस्सा है या प्राकृतिक है। वे ये सब बातें किताबों में शिक्षा के रूप में पढ़ते हैं, पर इनमें विश्वास नहीं करते। उनकी सच्चाई अन्धविश्वास और आस्था पर आधारित है। अन्धता विचारों में उग्रता और कट्टरपन लाती है। जितना अन्धापन बढ़ेगा, उतना ही कट्टरपन बढ़ेगा और उतनी ही फासीवाद के विकास की मजबूत बुनियाद तैयार होगी, लोकतंत्र की नहीं। आपको कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि अन्धापन विज्ञान का दुश्मन है और साथ ही इन्सान का भी दुश्मन है।

सभी को यह जानना और याद रखना चाहिए कि इतिहास में विज्ञान बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रान्ति के प्रारम्भ में तेज गति से पनपा और अत्यंत मुक्त और खुले परिवेश में विकास कर सका जहाँ दार्शनिक सहनशीलता के आधार पर विचार-विमर्श, वार्तालाप और वाद-विवाद को समाज में प्रोत्साहित किया जाता था। लेकिन आज वही बुर्जुआ वर्ग अपनी अवश्यम्भावी मृत्यु से डर कर विरोधियों की आवाज का गला घोंट रहा है; वाद-विवाद और विचार-विमर्श के परिवेश को तबाह कर रहा है; सभी लोकतांत्रिक मूल्यों, तौर -तरीकों और मापदण्डों को पैरों तले कुचल रहा है। आपको इसके के खिलाफ जुझारू संघर्ष करना होगा और इन घोर अलोकतांत्रिक रुझानों और प्रवृत्तियों को दूर करना होगा और सच्चे जनवाद के लिए विभिन्न विचारों के खुले और मुक्त आदान-प्रदान को सुनिश्चित करना होगा जो अन्ततः सच्चाई को जन्म देता है।

एक दूसरी मुख्य शर्त जिसके अन्तर्गत विज्ञान का विकास हो सकता है वह है धर्म-निरपेक्ष वातावरण। बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रान्ति अपने प्रारम्भिक काल में हर धार्मिक उन्माद, अलौकिक शक्ति में विश्वासों और रूढ़िवादी विचारों से लड़ी थी। पुनर्जागरण काल के महान मनीषी जीन जैक्स रूसो ने कहा था कि मनुष्य आजाद पैदा होता है, पर वह हर जगह खुद को बन्धन में पाता है। 'इन बंधनों को तोड़ डालो, इन बेड़ियों को तोड़ डालो' –ये पूँजीवाद के उत्थान के समय बुर्जुआ वर्ग के नारे थे। अब मरणासन्न पूँजीवाद की अवस्था में बुर्जुआ वर्ग ने धर्म-निरपेक्षता की अवधारणा को विकृत कर दिया है और इसे कमजोर बना दिया है। धर्म-निरपेक्षता का अर्थ किसी भी अप्राकृतिक सत्ता को मान्यता न देना था और अब इसे बिगाड़ कर सब धर्मों को समान प्रोत्साहन देने की अवधारणा में पतित कर दिया गया है। पूँजीवाद के द्वन्द्व ने बुर्जुआ वर्ग को उसी विचार के विरोध में खड़ा कर दिया जिसके लिए बुर्जुआ नवजागरण आन्दोलन शुरू हुआ था। दोस्तो, आप विज्ञान के विकास के लिए लड़ रहे हो, आपको धर्म निरपेक्षता के जानबूझकर बिगाड़े गए स्वरूप के खिलाफ मजबूती से लड़ना होगा।

कुछ लोग तो इतने अन्धे हैं कि वे कहते हैं कि जो कुछ आप लोग आज देखते हो जैसे हवाई जहाज, रॉकेट आदि वे सब प्राचीन भारतवर्ष में मौजूद थे। आधुनिक विज्ञान ने केवल उन चीजों से ही लिया है। ये लोग पौराणिक गाथाओं और इतिहास के बीच अन्तर को नहीं समझते हैं। हर तरह की पौराणिक गाथाओं में अतिश्योक्तियाँ, काल्पनिक तस्वीरें और अद्‌भुत उपमाएं और बेसिर पैर की कल्पनाएं इत्यादि हैं। यूनानी पौराणिक गाथाओं में कई हीरो सिर्फ सैण्डिल या खड़ाऊँ पहन कर ही आसमान में चले जाते थे। इसी तरह देवदूत और परियाँ सभी परिकथाओं में पाए जाते हैं। क्या असल में परियाँ या देवदूत होते हैं?

ऐसी कोई भी चीज असल में नहीं होती। लेकिन वे पूरी तरह अवास्तविक भी नहीं हैं। फिर इस विरोधाभास को कैसे सुलझाया जाए? मानव किसी ऐसी चीज के बारे में नहीं सोच सकता जो भौतिक जगत में नहीं है। फिर यह परिकथाओं में कैसे होता है? यह इसलिए हो सका कि सुन्दर स्त्रियाँ, बच्चे हैं और अपने पंखों से उड़ सकने वाले पक्षी हैं और साथ ही मनुष्य में पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा है। इसलिए कल्पना में कोई भी पक्षियों के पंख काटकर सुन्दर स्त्रियों और बच्चों के शरीरों पर लगा सकता है और उनके उड़ने का सपना देख सकता है।

इस संदर्भ में, मैं एक बात और बताना चाहूँगा जो मेरी जिंदगी में घटी। चेन्नई में एक आदमी जो तर्कशील आन्दोलन से जुड़ा हुआ था, मेरी एक चर्चा में शामिल हुआ। वह इतना प्रभावित हुआ कि चर्चा के बाद वह मुझ से मिला और अपने प्रकाशनों में से एक पुस्तक मुझे भेंट की। अगली बार जब वह मुझ से मिला तो उसने मुझसे पूछा कि मुझे वह किताब कैसी लगी। मैंने उसे जवाब दिया कि 'यदि आप बुरा न मानो तो मैं बताऊँ कि आपके तर्क से मैं सहमत नहीं हूँ। आपने यह साबित करने की कोशिश की है कि हनुमान न तो पहाड़ उठा सकता था, न उगते सूरज को अपनी बगल में छिपा सकता था और न ही कूद कर समुद्र पार करके लंका जा सकता था। यदि उनमें ऐसी कुछ चीजें नहीं होती तो मैंने रामायण या महाभारत पढ़ी ही नहीं होती।' हालांकि तर्कवादी लोग इन चीजों का मजाक उड़ाते हैं, लेकिन हमारी आबादी का एक बड़ा भाग इन सब बातों में अंधी आस्था रखता है, यह विश्वास करते हुए कि ऐसे करतब बजरंग बली असल में कर सकते थे। दोनों पक्षों ने चीजों को अति की सीमा तक ले लिया, उनमें से कोई सा पक्ष भी यह नहीं समझ सका कि उन दिनों महाकाव्यों को लिखने की कला की विधा यही थी।

फिर भी प्राचीन भारतीय विरासत के प्रचारक 'अतीत की इन उपलब्धियों' को राष्ट्रीय विरासत के साथ जोड़ते हैं। वे समाज के ऐतिहासिक विकास से इतने अनभिज्ञ हैं कि वे इस मूल बात को भी नहीं समझते हैं कि वैदिक युग का तो कहना ही क्या, सामन्तवाद के दौरान भी कहीं भी पूरी दुनिया में ऐसे राष्ट्र नहीं थे। राष्ट्र बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रान्ति की उत्पत्ति है जैसे कि फ्रांसीसी क्रान्ति, इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति, अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम या हमारे देश का स्वतंत्रता आन्दोलन। सन् 1947 के बाद हम राष्ट्र बने। उससे पहले हमारे देश में बहुत सी राष्ट्रीयताएं थीं, भारत में कोई राष्ट्र नहीं था। राष्ट्र स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान निर्माण में था।

ये लोग पुरानी राष्ट्रीय विरासत की बात करते हैं, अतीत की उपलब्धियों को इस हद तक महिमामण्डित कर डालते हैं कि वे भविष्य की तरफ नहीं देखते हैं बल्कि पीछे की तरफ ही देखते रहते हैं। वे प्रचार करते हैं कि हमारी वैदिक साइंस एक महान विज्ञान है। इसलिए हर व्यक्ति को वैदिक साइंस सीखनी चाहिए, वैदिक गणित इत्यादि सीखना चाहिए। जनता का एक बड़ा भाग इसमें अंधविश्वास रखता है। वे कहते हैं कि हम अतीत में इतने महान थे कि हमारे पास सब कुछ था। वे कहते हैं कि अंग्रेजों से सीखने को क्या है, हम इतने महान थे कि जब हम एक महान सभ्यता में थे, वे जंगल में थे। शायद आपने महान उपन्यासकार शरत्‌चन्द्र चैटर्जी की कुछ रचनाएं पढ़ी होंगी। वे महान उपन्यासकार थे, निश्चित ही वे एक महान उपन्यासकार तो थे ही लेकिन साथ ही वे एक दार्शनिक भी थे। वे समझते थे कि तथाकथित पुरानी राष्ट्रीय विरासत का विचार हमारे छात्र-नौजवानों को अन्धा और कट्टरपंथी बना देगा और इस तरह उनकी बौद्धिक और सांस्कृतिक योग्यता के विकास में रुकावट बन जाएगा। इतिहास के प्रति उनका नजरिया वैज्ञानिक होना चाहिए। इसलिए उन्होंने छात्र-नौजवानों को सम्बोधित करते हुए कहा था, ''संसार माने या न माने हम एक बड़ी जाति हैं, उछल-कूद मचाकर चारों ओर इसकी घोषणा करने में मैं जिस प्रकार गौरव का अनुभव नहीं करता, उसी प्रकार विदेशी राजशक्ति को धिक्कार देकर कहने में मुझे लज्जा का बोध होता है कि हे अंग्रेज तुम लोग कुछ नहीं हो, क्योंकि अतीत काल में जब हम लोगों ने इन बड़े-बड़े कामों को किया उस समय तुम लोग पेड़ों की डालों पर कूदते फिरते थे। और व्यंग करते हुए मुझे कोई कहता है कि तुम लोग अगर सचमुच ही इतने बड़े हो तो हजारों वर्षों से कभी पठान, कभी मुगल, कभी अंग्रेजों के चरणों पर तुम्हारा मस्तक क्यों नत होता है? तो उपहास के प्रत्युत्तर में भी मैं इतिहास की पोथियों को उलट कर दूसरी जातियों की दुर्दशा के नजारे पेश करने में घृणा का अनुभव करूँगा। वस्तुतः, इस तर्क से कोई फायदा नहीं। अतीत काल में तुम्हारे-हमारे पास क्या था, इसे लेकर ग्लानि बढ़ाने से क्या होगा। मैं कहता हूँ अंग्रेज आज तुम बड़े हो। शौर्य में, वीर्य में, देशभक्ति में तुम्हारा सानी नहीं है, किन्तु मेरे बड़े होने की सामग्री भी मौजूद है। आज देश का युवक-चित्त रास्ते की तलाश में चंचल हो उठा है, उसे रोकने की शक्ति किसी में नहीं है, तुममें भी नहीं है। तुम जितने भी बड़े क्यों न हो, वह तुम्हारी तरह बड़ा होकर अपने जन्मसिद्ध अधिकार को प्राप्त कर ही लेगा।''

आप इन दोनों नजरियों के बीच अन्तर देखिए! वे कहते हैं कि अतीत में जाओ, अतीत इतना गौरवशाली था। वे बीते समय के गौरव को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाते हैं। क्या आप असल में अतीत में वापस जा सकते हैं? बहुत लोग अपने बचपन में वापिस जाना चाहते हैं क्योंकि कि वर्तमान समाज में सर्वव्यापक संकट, केवल आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक संकट ही नहीं बल्कि नीति-नैतिकता और सांस्कृतिक क्षेत्रों के संकट, सब ने मिल कर जीवन को असहनीय और घुटन भरा बना दिया

(शेष पृष्ठ 4 पर)

महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ रोष प्रदर्शन

मुरादाबाद (उ.प्र.) : महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ एआईडीवाईओ, एआईडीएसओ और एआईएमएसएस ने संयुक्त रूप से 30 दिसम्बर को 'दामिनी' 'निर्भया' की दूसरी मृत्यु वार्षिकी पर शहर में जुलूस निकाला और संकल्प सभा की।

जुलूस रेलवे स्टेशन से शुरू हुआ ओर जिला अधिकारी के कार्यालय पहुंचा। इसके बाद महामहिम राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन जिला अधिकारी की मार्फत भेजा गया। ज्ञापन में 'दामिनी' के बलात्कारियों को अतिशीघ्र सजा देन, महिलाओं व बच्चियों की इज्जत की रक्षा की गारण्टी करने, अश्लील साहित्य, सिनेमा, विज्ञापनों व पोर्न वेबसाइटों पर रोक लगाने, हर तरह के नशीले पदार्थों, शराब, ड्रग्स आदि के उत्पादन, बिक्री व प्रचार पर पाबंदी लगाने, महिला के अश्लील चित्रण-विरोधी कानून को सख्ती से लागू करने, कार्यस्थलों पर यौन शोषण रोकने और महिलाओं से संबंधित केसों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाने आदि की मांग की गई।

सभा की अध्यक्षता एआईडीवाईओ के जिला अध्यक्ष विनोद विग, एआईडीएसओ की जिला अध्यक्ष ऋतु चौधरी, ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की जिला अध्यक्ष बालसुन्दरी तिवारी ने की। सभा को वरिष्ठ साहित्कार माहेश्वर तिवारी, प्रो. चन्द्रभान यादव, एआईडीवाईओ के प्रदेश अध्यक्ष हरकिशोर सिंह, एआईयूटीयूसी की प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कमलेश चाहल, भावना सिंह, लिपि सिंह, मौ. गौरी, शशिबाला, आदि ने सम्बोधित किया। सभी ने एक स्वर में इस आन्दोलन को तेज करने का संकल्प लिया।

हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) : 16 दिसम्बर को छात्रों की एक विशाल रैली प्रेस क्लब, बसीरबाग में पहुँच कर एक कन्वेन्शन में तब्दील हो गई। इसमें लगभग 250 छात्रों ने शिरकत की। ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की राज्य अध्यक्ष श्रीमती जी ललिता मुख्य वक्ता थी। संगठन की हैदराबाद जिला अध्यक्ष श्रीमती हेमलता ने कन्वेन्शन की अध्यक्षता की। स्टेनले इंजिनियरिंग कॉलेज के असिस्टेंट प्रो. श्री गंगाधर और एआईडीवाईओ के जिला इंचार्ज श्री के भारत ने भी बात रखी।

28 दिसम्बर को महिला सुरक्षा समिति की ओर से एक नागरिक सभा की गई। तेलगू यूनिवर्सिटी के पूर्व रजिस्टरार प्रो. टी गौरीशंकर ने इसकी अध्यक्षता की। जाने माने कवि श्री हिमाजवाला और महिला सांस्कृतिक संगठन की राज्य सचिव श्रीमती सीएच प्रमिला ने सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ते अत्याचारों और अपराधों को रोकने के लिए जनकमेटियाँ बनाने पर जोर दिया। श्री के वेंकटेश और श्री एस राजुलू , दोनों ही वकीलों ने भी बात रखी। 25 सदस्यीय महिला सुरक्षा समिति गठित की गई जिसकी कन्वीनर श्रीमति सीएच प्रमीला बनाई गई।

29 दिसम्बर को प्रो. टी गौरीशंकर, विधान परिषद सदस्य श्री पतुरी सुधाकर रेड्डी और श्रीमती सीएच प्रमीला की अगुआई में एक प्रतिनिधिमण्डल सूचना व तकनीक मंत्री श्री के टी रामा राव से मिला और ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में पोर्न वेबसाइटों पर रोक लगाने, शराबखोरी रोकने, हर रूप में अश्लीलता पर पाबंदी लगाने और निर्भया एक्ट को सख्ती से लागू करने की मांग की गई। 28-29 दिसम्बर को स्थानीय स्तर पर केण्डिल मार्च व श्रद्धांजली सभाएं भी की गई।

पेशावर में तालिबान द्वारा किये गये स्कूली बच्चों के हत्याकाण्ड की निन्दा

पटना (बिहार) : पेशावर में कट्टरपंथियों-आतंकवादियों द्वारा छात्रों की बर्बरतापूर्ण हत्या के खिलाफ वामपंथी दलों–सीपीआई, सीपीआई (एम), भाकपा (माले), एसयूसीआई (कम्युनिस्ट), आरएसपी और अखिल हिन्द फॉरवर्ड ब्लॉक के तत्वावधान में 20 दिसम्बर को आकाशवाणी के निकट से मौन जुलूस निकाला गया। मौन जुलूस में विभिन्न वामपंथी दलों के लोग 'साम्राज्यवाद-आतंकवाद का नाश हो', 'साम्राज्यवाद-सम्प्रदायवाद हो बर्बाद', 'धर्मनिरपेक्ष वैज्ञानिक शिक्षा लागू करो', 'कट्टरपंथियों द्वारा बच्चों की हत्या को धिक्कार' आदि नारे लगा रहे थे।

पटना जंक्शन गोलम्बर पर जाकर मौन जुलूस सभा में तब्दील हो गया। सभा को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बिहार राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड अरूण कुमार सिंह ने कहा कि कट्टरपंथी तहरीक-ए-तालिबान के सशस्त्र हत्यारों द्वारा पेशावर के आर्मी पब्लिक स्कूल के 140 निर्दोष मासूम छात्रों की बर्बरतापूर्ण हत्या अक्षम्य है। इसकी जितनी भी निन्दा की जाये, कम है। तालिबान समेत ऐसे तमाम संगठनों को अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने अपने बदतरीन वर्चस्ववादी हितों और अंतर्राष्ट्रीय डाकेजनी की नीतियों के तहत प्रोत्साहित किया। आज वे ही सबसे खतरनाक आतंकवादी और मौत के सौदगर के रूप में मध्ययुगीन बर्बरता को भी पीछे छोड़ते हुए प्राणघातक हिंसा के सहारे नरसंहार करवा रहे हैं। इस कायरतापूर्ण कार्रवाई में वे अपनी ताकत के प्रदर्शन के लिए निर्दोष लोगों, यहाँ तक कि बच्चों को भी निशाना बना रहे हैं। कॉ. सिंह ने कहा कि इन धार्मिक कट्टरपंथियों और बेलगाम हत्यारों का कोई धर्म नहीं होता, कोई देश नहीं होता और यहाँ तक कि वे इनसान भी कहलाने के योग्य नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा कि प्रतिक्रिया की ताकत से उपजे ये संगठन हत्यारी मानसिकता के साथ अपने निहित स्वार्थ को पूरा करने हेतु मानव जाति को अंधेरे में ले जाने वाले हैं। लेकिन पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों के शासक इन खूंखार ताकतों से जनता की रक्षा कर पाने में विफल हैं।

सभा को सीपीआई, सीपीआई (एम), भाकपा (माले) और अखिल हिन्द फॉरवर्ड ब्लॉक के नेताओं ने भी संबोधित किया।

पटना में जुलूस निकालते हुए वामपंथी दलों के कार्यकर्ता

दुर्ग छ.ग.

पाकिस्तान के पेशावर के सेना के स्कूल में तालिबानी आतंकवादियों द्वारा 140 स्कूली बच्चों के निर्मम हत्या के विरोध में जिला दुर्ग छ.ग. में प्रदर्शन एवं शोक सभा की गई। ऑल इण्डिया डीएसओ और ऑल इण्डिया डीवाईओ की दुर्ग इकाइयों की ओर से कलेक्टोरेट चौक से जुलूस निकाला गया जो इन्दिरा मार्केट होते हुए वापस चौक पर पहुँचा। वहाँ बच्चों को मौन धारण कर श्रद्धांजली दी गई। सभा को एस.यू.सी.आई. (सी) के जिला सचिव कॉ. विश्वजीत हारोड़े, ऑल इण्डिया डीएसओ इंचार्ज आत्माराम साहू, ऑल इण्डिया डीवाईओ की इंचार्ज अनीता साहू ने सम्बोधित किया।

मुम्बई (महाराष्ट्र) : पेशावर हत्याकाण्ड को लेकर 19 दिसम्बर को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), सीपीआई, सीपीआई(एम) और सीजीपीआई की ओर संयुक्त रूप से दादर (पूर्व) रेलवे स्टेशन के समक्ष एक शोक सभा की गई और मौन रख कर व मोमबतियाँ जला कर पेशावर में मारे गये स्कूली बच्चों को श्रद्धांजलि दी गई। शोक सभा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)के कॉमरेड अनिल त्यागी, सीपीआई के प्रकाश रेड्डी, सीपीआई(एम) के रईश ने सम्बोधित किया।

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 2 का शेष)

है। इसीलिए हम कल्पना करते हैं कि हमारा बचपन कितना सुन्दर था। कोई चिन्ता नहीं, स्कूल जाओ, बारिश में भीग जाओ और टीचर से छुट्टी मांग लो। तब बच्चे खेलने चले जाते और जीवन में मजा करते। लेकिन वस्तुगत तौर पर या ऐतिहासिक तौर पर क्या हम वास्तव में ही अपने बचपन के दिनों में लौट सकते हैं। पर यह सरल और सीधा सपना है जो ऐतिहासिक तौर पर संभव नहीं है। यह समाज के लिए भी समान रूप से सत्य है। इसके अलावा, बचपन में निश्चित तौर पर संभावनाएं होती हैं पर निश्चित ही जवानी के दिनों में ही आदमी या औरत शारीरिक और बौद्धिक, दोनों तरह से बहुत ऊँचा स्तर हासिल कर सकते हैं। लेकिन आलोचनात्मक रूप से कहें तो निश्चित ही आप मानसिक रूप से अतीत में वापस जा सकते हैं। इसका अर्थ है कि आपने अपनी सोच को ही बूढ़ा बना लिया है। इस प्रकार आपने वैचारिक तौर पर खुद को बूढ़ा बना लिया है जबकि शारीरिक तौर पर आप जवान हैं। अर्थात् आपके विचार 2-3 हजार वर्ष पुराने लोगों के विचार हैं। ये वास्तव में आधुनिक विचार नहीं हैं। ये बहुत पिछड़े और प्रतिक्रियावादी विचार हैं। प्रगतिशील विचार नहीं हैं। पुन: शरतचन्द्र चैटर्जी नौजवानों को कहते हैं कि हम जवानी और बुढ़ापे को कैसे परिभाषित करें? वे कहते हैं, ''...किस संज्ञा से यौवन का निर्देश किया जा सकता है। अतीत जिसके लिए अतीत से अधिक नहीं, वह जितना ही बड़ा क्यों न हो, मुग्धचित्त होकर उसी से चिपक कर समय गंवाने की फुरसत जिसे नहीं, जिसकी वृहत्तर आशा और जिसका विश्वास अनागत के अन्तराल की कल्पना से उद्भासित है, वही तो यौवन है। यहीं वृद्धों की पराजय है। ...जीवन के अन्तिम समय के दिनों को जीजान से अतीत से चिपके रहने में ही उन्हें(वृद्धों को) सांत्वना मिलती है, इस अवलम्बन को वे किसी भी दशा में नहीं छोड़ सकते। उन्हें बराबर भय रहता है कि इससे अलग होने पर उन्हें खड़े होने की शरण कहीं नहीं मिलेगी।'' अतीत की शिक्षाएं नौजवानों का भविष्य उज्जवल बनाती हैं। यही असल और प्रगतिशील जीवन की धारणा है।

दोस्तो, मैं जानता हूँ कि आप अज्ञानियों के द्वारा फैलाई जा रही भ्रान्तियों से भ्रम में नहीं पड़ेंगे और प्रतिक्रियावादी प्रचार से गुमराह नहीं किये जा सकेंगे। इसके बजाए आप इस विचार को निश्चित तौर पर विशाल जन समूह के पास ले जाएंगे। खास तौर पर छात्र-नौजवानों के पास जो इस शातिराना प्रचार के मासूम शिकार हैं। निस्सन्देह यह अपने आप में एक बहुत ही स्थूल प्रचार है। लेकिन साथ ही साथ अन्य और भी प्रचार और भ्रान्तियाँ हैं जो और भी सूक्ष्म हैं। वे जो पौराणिक कहानियों की काल्पनिक उपलब्धियों के साथ इस तरह स्थूल रूप से नहीं चिपकते हैं जैसे कि उपरोक्त अभिप्रेरित और मासूम लोग चिपकते हैं, उनमें से कुछ प्राचीन भारत की सच्ची उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं जैसे कि इस्पात का आविष्कार और आर्यभट्ट का गणित या सुश्रुत की चिकित्सा विज्ञान में उपलब्धियाँ। वे सब निस्संदेह उस जमाने में बड़ी उपलब्धियाँ थी। पर जो भी कारण रहा हो उनके विचार और आगे नहीं बढ़ाए जा सके। इसलिए वे विचार पिछड़े ही रह गए। जिसे हम आधुनिक विज्ञान कहते हैं, उसका विकास भारत की उन दिनों की खोज के आधार पर नहीं हुआ। जैसा कि मैंने बताया और आप सभी जानते हैं कि आधुनिक विज्ञान की शुरूआत कोपरनिकस से हुई थी।

केन्द्र में बीजेपी के पहले शासन काल के दौरान विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में ज्योतिष को लागू करने का प्रयास किया गया था। बहुत सारे लोग मानते हैं कि ज्योतिष एक विज्ञान है। दूसरे इतने मुखर नहीं हैं, पर वे भी ज्योतिष को एक छद्म विज्ञान मानते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि ज्योतिष न केवल छद्म विज्ञान है बल्कि विज्ञान-विरोधी भी है। ज्योतिषी वास्तविक भौतिक जगत पर नहीं, बल्कि भाग्य और होनी पर विश्वास करते हैं। मैंने अपनी पहली कुछ चर्चाओं में एक उदाहरण देकर इस बिन्दु को समझाने की कोशिश की है। हम अंधेरे से डरते हैं। क्यों? क्योंकि अंधेरे में हम देख नहीं पाते हैं कि हमारे सामने क्या पड़ा हुआ है। हम नहीं जानते आया कि कोई सांप, या चीता, या गड्ढा, या छेद या कण्टीली झाड़ियाँ हैं। इसलिए हम लोग आगे बढ़ने से डरते हैं। पर यदि हमारे हाथ में टार्च हो जो हमारे सामने तेज रोशनी फेंकती हो और इतना तेज उजाला कर दे कि जिससे रेत का कण भी हमें दिख जाए तो हम अपना रास्ता आसानी से ढूँढ़ पाएंगे और निडरता से आगे चल पाएंगे। इस तरह मनुष्य ने प्रगति की है और आज की सभ्यता का निर्माण विज्ञान की सहायता से किया है। कोई ज्योतिष ऐसा न तो कर सका है या न ही कर सकता है क्योंकि असली विज्ञान ही भौतिक जगत पर रोशनी डालता है, इसके छिपे हुए नियमों को उद्घाटित करता है और रास्ता दिखाता है जबकि ज्योतिष विद्या हमारी आंखों पर ऐसी रोशनी डालती है जो अंधकारपूर्ण भविष्य और अधिक अंधियारा कर देती है और हमारी तरक्की को रोकती है।

अन्तत: मैं विज्ञान के बारे में एक गंभीर भ्रम के बारे में बताऊँगा। विज्ञान के खिलाफ दोनों ही, अभिप्रेरित प्रचारक और अज्ञानी लोग जिसमें विश्वविद्यालयों के बहुत सारे पढ़े लिखे योग्यताप्राप्त प्राध्यापक, प्रोफेसर भी मानते हैं कि विज्ञान हमें वास्तविक ज्ञान तो देता है लेकिन नीति-नैतिकता या मूल्यबोधों की अवधारणा नहीं। यह सबसे ज्यादा खतरनाक भ्रम है। असल में विज्ञान का जो परस्पर सम्बंधित ज्ञान विकसित हुआ है, केवल यही ऊँची नीति-नैतिकता और उच्च सिद्धान्तों की भावना और मूल्यबोधों की अवधारणाओं को विकसित कर सकता है। विज्ञान की हर शाखा की अपनी नीति-नैतिकता है, इसी प्रकार चिकित्सा विज्ञान की अपनी चिकित्सा सम्बंधी नीति-नैतिकता है। इससे पता चलता है कि विज्ञान ने आधुनिक समय की बहुत ऊँचे स्तर की नीति-नैतिकता विकसित की है। केवल वे ही महान वैज्ञानिक बन सके हैं जिन्होंने वास्तव में ही इस उच्च नीति-नैतिकता को विकसित किया जैसा कि हम कोपरनिकस, ब्रूनो, गैलिलियो, लेवोज़ियर, न्यूटन, आइन्स्टाइन, मैरी क्यूरी, लुई पास्चर और अन्यों के मामले में देखते हैं। उन सभी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में बहुत ऊँचे सांस्कृतिक और नैतिक स्तर को प्रतिबिम्बित किया था। वे सत्य और उच्च नैतिकता को बुलन्द रखने के लिए युगों पुरानी नीति-नैतिकता और मूल्यबोधों की अवधारणाओं के खिलाफ लड़े थे। इसके लिए कोपरनिकस को आजीवन यातनाएं झेलनी पड़ी थी, ब्रूनो ने अपनी जान कुर्बान कर दी थी, गैलिलियो को धर्माधिकारियों की जाँच का सामना करना पड़ा था। आइन्स्टाइन की नीति-नैतिकता को देखिए : वे कहते हैं कि मैं जो भी समाज से लेता हूँ उदाहरण के लिए जिस कमीज को मैं पहनता हूँ और जो भोजन मैं खाता हूँ ये सब समाज और सामाजिक श्रम के उत्पाद हैं। इसी के फलस्वरूप मेरा दायित्व बनता है कि मैं समाज को बराबर मात्रा में वापस दूँ। यह ऊँची नीति-नैतिकता और साथ ही एक सामाजिक मूल्य की धारणा है। मैडम मैरी क्यूरी से बहुत सारे लोगों ने अनुरोध किया कि वे अपनी रेडियम की खोज का पेटेण्ट करवा लें। इससे वे दुनिया की सबसे अमीर इन्सान बन सकती थी। पर उन्होंने इसको दृढ़तापूर्वक नकार दिया। वे चाहती थी कि इससे जरूरतमन्द लोगों की सेवा होनी चाहिए। यह एक बहुत ऊँचा सामाजिक मूल्यबोध है।

आज जब पुराने सब मूल्यबोध पूरी तरह से नि:शेष हो चुके हैं, विज्ञान का परस्पर सम्बद्ध ज्ञान ही वास्तविक नीति-नैतिकता और सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है। हमारा जीने का अंदाज ऐसा होना चाहिए कि जो हम कहें वही हम अभ्यास करें। आपको इन सब में विश्वास करना चाहिए। जो लोग इन तमाम नैतिक धारणाओं को किताबों से पढ़ते हैं पर उनमें विश्वास नहीं करते, बल्कि युगों पुरानी नीति-नैतिकता की धारणाओं में विश्वास करते हैं, वे देश को उसी सामन्ती युग में वापस ले जाने का प्रयास करते हैं। इन पुरानी नीति-नैतिकता की धारणाओं और मूल्यों से संघर्ष करके उन्हें ऊँची नीति-नैतिकता और सामाजिक मूल्यों से बदल कर जिनका सामाजिक जीवन में विकास हो रहा है, हम अपने देश को आगे ले जा सकते हैं। यह दुनिया के सब देशों के लिए सच है।

इस संदर्भ में हमें याद रखना चाहिए कि किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति द्वारा मानव ज्ञान भण्डार में किए गए योगदान को मान्यता देनी है। यही उच्च नैतिकता की धारणा है। जब तथाकथित राष्ट्रीय भावनाओं को अंधतापूर्ण महिमामण्डित करते समय हम औरों की देन को भूल जाते हैं, तो यह बहुत ही अनैतिक है। जबकि सच्चाई यह है कि आधुनिक विज्ञान के विशाल ज्ञान भण्डार में और ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों में भारतीयों ने बहुत कम योगदान दिया है। इस सच्चाई को स्वीकार करने के लिए ऊँची नैतिकता और सच्ची विनम्रता की जरूरत होती है। आधुनिक विज्ञानों के विकास का इतिहास किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो पूर्वाग्रहों से मुक्त है, दिखाएगा कि कुछ क्षेत्रों के सिवाय जैसे जगदीशचन्द्र बसु, प्रफुल्लचन्द्र राय, मेघनाद साहा, सी.वी. रमन, और अन्यों को छोड़कर भारतीयों ने आधुनिक विज्ञान के ज्ञानभण्डार को विकसित और समृद्ध करने में बहुत कम योगदान दिया है। इस तथ्य को विनम्रता से मानकर ही हम मानव ज्ञान में योगदान कर पाएंगे।

हम इस बात को कभी नहीं भूलेंगे कि ज्ञान की कोई राष्ट्रीय सीमा नहीं होती। कोपरनिकस और गैलिलियों के ज्ञान के बिना इतिहास में न्यूटन का आविर्भाव नहीं होता। इसी तरह न्यूटन के ज्ञान के बिना आइन्स्टाइन का आविर्भाव असंभव होता। मैंने बहुत कम लोगों का नाम लिया है। आइन्स्टाइन के विचार का आविर्भाव बहुत सारे वैज्ञानिक जो उनसे पहले या उनके समय आए उनके विचारों के समन्वय और सम्मिलन से हुआ। आइन्स्टाइन इस तथ्य को मान्यता देते हैं। उन्होंने कहा कि आज के विज्ञान का विकास उनके पूर्ववर्ती वैज्ञानिकों के द्वारा स्थापित एक ठोस बुनियाद पर खड़े होने से ही संभव हो सका।

एक अन्य वैज्ञानिक लुई पास्चर ने बताया कि ज्ञान का कोई राष्ट्र या कोई राष्ट्रीय सीमा नहीं होती है। यह सम्पूर्ण मानव जाति के संघर्ष की उपज है। जो लोग ज्ञान को राष्ट्रीय चरित्र और सीमाओं के साथ सीमित कर देते हैं वे जाने-अनजाने असल में संपूर्ण राष्ट्र के विकास में रुकावट डाल देते हैं। जबकि वे लगातार राष्ट्रवाद के मंत्र का जाप करते रहते हैं।

अंत में, मनुष्य की तरह ही जानवर जीवन के लिए प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। लेकिन दोनों के बीच बुनियादी फर्क यह है कि संघर्ष के दौरान जानवर संयोग से बच पाते हैं वरना नष्ट हो जाते हैं। वे प्राकृतिक नियमों के अधीन हैं। परन्तु मनुष्य अपनी सोचने की शक्ति के कारण न केवल बचा हुआ है बल्कि लगातार प्रकृति पर विजय हासिल करता जा रहा है। यह इसलिए नहीं है कि मनुष्य वस्तुपरक नियमों को बदल सकता है। प्रकृति, समाज और विचारों के वस्तुपरक नियमों का न तो सृजन किया जा सकता है और न ही विनाश किया जा सकता है। तब मनुष्य भौतिक जगत को कैसे बदलता है? ऐसा इसलिए है कि विज्ञान की सहायता से मनुष्य को पता चल गया है कि प्रकृति और समाज के नियम अनुकूल परिस्थितियों में काम करते हैं। मनुष्य को यह पता चल गया कि प्रतिकूल अवस्थाओं में ये नियम काम नहीं कर सकते हैं। इसलिए मनुष्य ऐसी अनुकूल परिस्थितियों का सृजन कर सकता है जिनमें जीवन विकास करता है और समाज आगे बढ़ सकता है। पर मनुष्य प्रकृति और समाज दोनों के नियमों का न तो सृजन कर सकता है न ही विनाश कर सकता है। किन्तु विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने यह समझा है कि मनुष्य अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण कर सकता है जिनके अन्तर्गत वे नियम उसे बढ़ने और विकास करने में मदद करते हैं। उसी तरह से उन नियमों के लिए मनुष्य प्रतिकूल अवस्थाओं का भी सृजन कर सकता है जो समाज को नुकसान पहुँचाते हैं। इस तरह से मनुष्य वर्तमान सभ्यता का निर्माण कर सका और आगे भी विज्ञान की सहायता से जीवन की और अधिक ऊँची अवस्थाओं का सृजन करता रहेगा। जो लोग मानव जीवन और समाज के विकास क्रम की इस वस्तुपरक प्रक्रिया को नहीं समझते, उनको भी इसे समझना है। पर जो लोग इस धारणा का विरोध करते हैं वे दरअसल जीवन के विकास में बाधा डालते हैं और इसलिए मानवजाति के दुश्मन हैं।

यह संदेश आपको बहुत लम्बा लग सकता है पर इसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। विज्ञान के क्षेत्र में इतने अधिक भ्रम फैले हुए हैं और इतने गहरे हैं कि इससे कम से काम नहीं चलता। अभी भी कई छोटी-मोटी भ्रान्तियों के बारे में मैं चर्चा नहीं कर पाया, जिनको दूर करना भी जरूरी है। मैं भविष्य में इसके लिए कोशिश करूँगा।

अन्तत: मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ और केवल आशा ही नहीं बल्कि विश्वास करता हूँ कि आप अपने विज्ञान आन्दोलन को सफल बनाएंगे।

शुभकामनाओं सहित

आपका

कृष्ण चक्रवर्ती

शिक्षा सम्मेलन की मांग : सरकार सीईटी कानून वापस ले

बंगलुरु (कर्नाटक) : मौजूदा स्वरूप में यदि सीईटी 2006 एक्ट लागू किया गया तो विनाशकारी परिणामों होंगे। इसके खिलाफ 22 दिसम्बर को गांधी भवन में एआईडीएसओ, अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति और मेडिकल सर्विस सेण्टर की ओर से मिल कर एक सम्मेलन आयोजित किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कर्नाटक सरकार के पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव बाला सुब्रमण्यम ने कहा, ''1993 में उन्नीकृष्णन बनाम स्टेट ऑफ आंध्र प्रदेश के केस में सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में एलान किया था कि शिक्षा मूलभूत अधिकार है। इसने आगे कहा था कि शिक्षा के अधिकार के बिना जीने का अधिकार जिसकी गारण्टी भारत के संविधान में दी गई है, बेमानी हो जाता है। लेकिन इस फैसले के विपरीत सुप्रीम कोर्ट ने 2002 में (टीएमए पाई केस) में कहा था कि अब से आगे शिक्षा संस्थानों के संचालन को मैनेजमेंटों का व्यवसाय, व्यापार या बिजनैस माना जाए। इस फैसले का नतीजा यह हुआ कि दाखिले और फीस तय करने के मामले में प्राइवेट मैनेजमेंटों को खुली छूट मिल गई। हमारे देश में भू माफियाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में भारी मात्रा में काला धन निवेश कर रखा है। अनेक राजनीतिक पार्टियों के नेता खुद मेडिकल और इंजिनियरिंग कॉलेजों के मालिक हैं। ऐसी स्थिति में यदि सीईटी 2006 एक्ट लागू किया गया तो यह विनाशकारी सिद्ध होगा। इसे रोकने के लिए जोरदार छात्र आन्दोलन समय का तकाजा है।''

अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति की राज्य सचिव कॉमरेड उमा ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा, ''राज्य सरकार को विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित करके केन्द्र सरकार को छात्रहितेषी कानून बनाने के लिए मजबूर कर देना चाहिए जो टीएमए पाई फैसले को निरस्त कर दे। जब तक ऐसा कोई कानून बने तब तक राज्य सरकार को सीईटी 2006 एक्ट को लम्बित रखना चाहिए।''

संविधान विशेषज्ञ प्रो. सी के एन राजा ने कहा, ''उदारीकरण-निजीकरण-भूमण्डलीकरण की नीतियों को लागू करके शिक्षा को खरीद-फरोख्त की चीज में तब्दील कर दिया गया है जो असल में संविधान की भावना के खिलाफ है। शिक्षा मुहैया कराना सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी है। लेकिन सरकार अपनी जिम्मेदारी प्राइवेट मैनेजमेंटों को सुपर्द कर रही है। यह भी संज्ञान में रहना चाहिए कि जो भी जमीन और अन्य संसाधन निजी शिक्षण संस्थानों के पास हैं वे सरकार द्वारा दिये गये हैं। इसलिए सीटों की मांग करने का सरकार को पूरा अधिकार है और प्राइवेट मैनेजमेंट इसे मानने को बाध्य हैं। लोगों में जागरूकता और चाह पैदा करने की जरूरत है ताकि शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की मांग को जोरशोर से उठाया जा सके।''

मेडिकल सर्विस सेण्टर के उपाध्यक्ष डा. गंगाधर और जानेमाने लेखक व अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमेटी, कर्नाटक के अध्यक्ष अल्लमाप्रभु वेट्टाडुरू ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया। सम्मेलन की अध्यक्षता एआईडीएसओ के राज्य अध्यक्ष कॉमरेड वी एन राजशेखर ने की।

सम्मेलन में टीएमए पाई फैसले के अनिष्टकर परिणामों को निरस्त करने के लिए छात्र-हितेषी केंद्रीय कानून पास करने की मांग को लेकर एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में, जस्टिस वी आर कृष्ण अय्यर की मृत्यु और तालिबान द्वारा पेशावर में आर्मी पब्लिक स्कूल के बच्चों के निर्मम हत्याकाण्ड पर दो शोक प्रस्ताव पेश किये गये और मौन रखा गया। जस्टिस एम एफ सल्दाना, गुलबर्ग यूनिवर्सिटी के पूर्व वीसी प्रो. एम वी नंदकारणी, अर्थशास्त्री डा. बी शेषाद्री, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डा. योगानंद रेड्डी द्वारा इस सम्मेलन के समर्थन में भेजे गये संदेशों को पढ़ कर सुनाया गया।

एआईडीएसओ का 8वां वडोदरा जिला सम्मेलन आयोजित

वडोदरा (गुजरात): 30 दिसम्बर को एआईडीएसओ का 8वां वडोदरा जिला सम्मेलन आयोजित किया गया। एमएस यूनिवर्सिटी और स्कूलों से आये छात्रों ने सम्मेलन में शिरकत की। 8वीं कक्षा तक पास-फेल प्रणाली के हटाये जाने, सेमेस्टर प्रणाली, अवैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली, शिक्षा के निजीकरण-व्यापरीकरण के खिलाफ प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

एआईडीएसओ के गुजरात राज्य अध्यक्ष कॉ. मुकेश सेमवाल ने शिक्षा-विरोधी विभिन्न नीतियों और पूंजीपति वर्ग व प्रशासन इनको क्यों लागू कर रहा, इस पर विस्तार से बात रखी।

एआईडीएसओ के गुजरात राज्य सचिव कॉ. भाविक राजा ने छात्रों की भूमिका और स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों व अन्य हस्तियों की महान परम्परा पर प्रकाश डाला। एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉ. तपन दासगुप्ता ने भी इस अवसर पर सम्बोधित किया।

सम्मेलन में एक नई जिला कमेटी चुनी गई जिसके अध्यक्ष पार्थ पाण्डेय, उपाध्यक्ष फेनिल सोनी, सचिव गिरीश परमार, सहसचिव आयुश कुलश्रेष्ठ व मनीष सिंह चुने गये। काऊन्सिल में 11 सदस्य और चुने गये। सब के लिए वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष व जनवादी शिक्षा के लिए लड़ने के जज्बे के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

हरियाणा में प्राइमरी से यूनिवर्सिटी स्तर तक गीता पढ़ाने का विरोध

रोहतक (हरियाणा) : प्रदेश के शिक्षामंत्री रामबिलास शर्मा द्वारा शिक्षा के पाठ्यक्रम में गीता को शामिल करने की घोषणा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने 30 दिसम्बर को जारी एक बयान में बेहद अनिष्टकारी कदम बताया। इसका कड़ा विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश व समाज को विज्ञान-सम्मत सोच, जनतांत्रिक मानवीय मूल्यों की बेहद जरूरत है। केवल इन्हीं के प्रचार-प्रसार से हर नागरिक का आचार-व्यवहार और सोच उन्नत हो सकती है और पूरे राष्ट्र के सभी लोग बिना किसी धर्म, नस्ल, जाति, भाषा व क्षेत्र के भेदभाव के आपस में मिल-जुल कर जनजीवन की मूलभूत साझी समस्याओं से जूझ सकते हैं। जनतांत्रिक मानवतावादी मूल्यबोध निश्चित रूप से ही सामंती काल में पनपे हर तरह के पुराने धार्मिक मूल्यबोधों से उन्नत हैं। तर्कशील मन, मानवीय सरोकार, जनतांत्रिक भावना-धारणा से ही किसी भी व्यक्ति में श्रेष्ठ इन्सानी गुणों और संस्कारों का सृजन सम्भव है। इस मौलिक आवश्यकता के उलट शिक्षामंत्री की घोषणा बाल्यकाल से ही घोर रूढ़िवादी, दकियानूसी विचारों को पनपाने वाली है।

कॉ. सत्यवान ने कहा कि शिक्षामंत्री का यह कथन बेहद बचकाना है कि गीता की पढ़ाई से आतंकवाद, मानव-शोषण व अन्याय जैसी समस्याओं से निजात पाने में मार्गदर्शन मिलेगा। सामंती काल का लम्बा इतिहास इसके खिलाफ खुद साफ गवाह है जिसके अन्याय-अत्याचार, भेदभाव, धार्मिक अन्धविश्वास, कूपमण्डुकता के खिलाफ हर देश में धर्मसुधारकों व समाज सुधारकों की कड़ी में नवजागरण की लहर खड़ी हुई थी जो मानवजाति को अन्धेरे से प्रकाश की ओर लाई थी। इसलिए शिक्षामंत्री का बयान वास्तविकता से परे है और प्रमाणित सत्य के विरुद्ध है। वे सांस्कृतिक फासीवाद कायम करना चाहते हैं।

कॉ. सत्यवान ने आगे कहा कि प्राचीन ग्रंथ गीता को औपचारिक तौर पर स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना बेहद अनिष्टकारी है। यह नीति भाजपा-संघ परिवार द्वारा अपने राजनैतिक स्वार्थपूर्ति के चलते शिक्षा के भगवाकरण करने की जघन्य चाल है। वह बहुसंख्यक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को उकसा कर साम्प्रदायिक भावनाएं और भातृघाती झगड़े पैदा करना चाहती है ताकि देश में कायम शोषणमूलक पूंजीवादी व्यवस्था की रक्षा की जा सके। असल में इसकी मंशा मेहनतकश लोगों की एकता व भाईचारे को कमजोर करना और उनमें फूट डालना है ताकि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार समेत जनजीवन की असली साझी समस्याओं के खिलाफ वे उठ खड़े होने लायक ही न रहें। कॉ. सत्यवान ने यह भी कहा कि देशवासियों व भावी पीढ़ियों को साम्प्रदायिकता के एक भीषण खतरे में डालने की भाजपा की इस गहरी चाल का डट कर विरोध करना चाहिए वरना पूरे समाज को, खासकर बहुसंख्यक समुदाय को भी भारी नुकसान होगा।

आंगनवाड़ी कर्मियों ने मंत्री को सौंपा अपनी मांगों का ज्ञापन

सोनीपत(हरियाणा) : सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन के नेतृत्व में 13 दिसम्बर को शहर में जुलूस निकाला गया। इसमें विभिन्न जिलों से आई हजारों आंगनवाड़ी कर्मियों ने शिरकत की। यूनियन की ओर से बाद में महिला एवं बाल विकास मंत्री कविता जैन को अपनी मांगों का ज्ञापन भी सौंपा गया।

ज्ञापन में मांग की गई कि आंगनवाड़ी कर्मियों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाए, 15 हजार रुपये प्रति माह न्यूनतम वेतन दिया जाए और रिटायरमेंट के समय कम से कम 2 लाख रुपये की राशि और प्रति माह 5 हजार रुपये पेन्शन दी जाए, बीमार पड़ने या फिर उनके साथ कोई दुर्घटना होने पर उनका फ्री इलाज करवाया जाए।

आंगनवाड़ी कर्मियों को सम्बोधित करते हुए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन, हरियाणा राज्य की प्रधान बिमला नैन ने कहा कि सरकार की गलत नीतियों के कारण आंगनवाड़ी कर्मियों के हितों को नुकसान पहुंच रहा है इसलिए सरकार इन नीतियों को बदले। आगंनवाड़ी एम्लाइज फैडरेशन ऑफ इण्डिया की महासचिव पुष्पा दलाल ने कहा कि सरकार सस्ती मजदूरी अर्थात् मामूली से मासिक मानदेय भत्ते पर काम पर रख कर आंगनवाड़ी कर्मियों का शोषण कर रही है। उन्हें सरकारी कर्मचारी के बजाय 'स्वैच्छिक कार्यकर्ता' का दर्जा दिया हुआ है। न तो

सोनीपत में सड़कों पर उतरी हरियाणा की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाएं

किसी भी मानक के हिसाब से योजना के लाभार्थियों और गर्भवती धात्री महिलाओं को पूरक पोषाहार मिल पाता है और न ही उसकी जमीनी कार्यकर्ता आंगनवाड़ी कर्मियों को उचित मेहनताना। आंगनवाड़ी कर्मियों को कोई वेतनमान देना तो दूर रहा, न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जा रहा है।

शीला, रोशनी चौधरी, राजेश्वरी, संतोष, कृष्णा देवी, सुनीता देवी आदि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के अलावा ऑल इण्डिया यूटीयूसी के राज्य सचिव कॉमरेड हरिप्रकाश, हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच के महासचिव सूबे सिंह, आर.के नागर आदि भी वक्ता थे।

मानव अधिकार दिवस पर मजदूरों का प्रदर्शन

सूरत(गुजरात) : 10 दिसम्बर, अन्तराष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस पर ऑल इण्डिया यूटीयूसी से सम्बद्ध साऊथ गुजरात टैक्सटाइल वर्कर्स यूनियन के बैनर तले सैकड़ों मजदूरों ने 'मजदूरों का अधिकार मानव अधिकार है' का नारा लगाते हुए प्रदर्शन किया और सूरत के श्रमायुक्त को एक मांग पत्र सौंपा।

दक्षिणी गुजरात में वस्त्र उद्योग से सम्बधित विभिन्न कारखानों में विभिन्न राज्यों से आये लगभग 13 लाख मजदूर काम करते हैं लेकिन इस पूरे क्षेत्र में लगभग कोई भी श्रम कानून लागू नहीं किया जाता है। टैक्सटाइल से सम्बधित लगभग सभी उद्योगों में ऐसे अमानवीय हालात मौजूद हैं। सूरत के एक केन्द्रीय स्थल चौक चार रास्ता पर मजदूर इकट्ठे हुए और दक्षिण गुजरात के विभिन्न उद्योगों में श्रम कानूनों को सख्ती से लागू करने की मांग करने के नारे लगाये ताकि भारत के संविधान द्वारा दिये गये न्यूनतम अधिकार मजदूरों को मिल सकें।

संगठन के अध्यक्ष नवल कुमार, महासचिव राममूर्ति मौर्य, उपाध्यक्ष तपन दासगुप्ता, सचिव जटाशंकर मौर्य, सचिव प्रफुल्ल साहू और कोषध्यक्ष भरत मौर्य को लेकर 6 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल श्रमायुक्त से मिला और उनको अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। इसमें सूरत सहित दक्षिणी गुजरात के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में श्रम कानूनों को सख्ती से लागू करने, सभी मजदूरों को

परिचय पत्र देने, ईएसआई और भविष्य निधि नीति लागू करने, न्यूनतम वेतन 15000 रुपये मासिक करने, पीने के पानी, शौचालय, केन्टीन और फर्स्ट एड मेडिकल किट सहित सभी सुविधाएं फैक्टरियों में मुहैया कराने आदि मांगें शामिल थी।

श्रमायुक्त ने प्रतिनिधिमण्डल को आश्वासन दिया कि मजदूरों की सभी मूलभूत मांगों पर ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि पहले फेज में एक लाख मजदूरों को पहचान पत्र मुहैया कराने की भी योजना सरकार बना रही है। उन्होंने यूनियन से सहयोग की इच्छा व्यक्त की।

नगरपालिका चैयरमैन को ज्ञापन सौंपा

सुलतानपुर (उ.प्र.) : नगरपालिका के संसाधन बढ़ाने, सफाई का प्रबंध करने के लिए सफाई कर्मियों को नियुक्ति करने, सुलभ शौचालय व पेशाबघर बनवाने, पेशाबघरों पर किये गये अवैध कब्जे हटाने, जगह-जगह कूड़ेदान रखवाने, तीन पालियों में सफाई करवाने, कूड़ा तुरंत उठवाने, सड़कों व नालियों की मरम्मत कराने, गलियों व सड़कों पर रोशनी की व्यवस्था कराने आदि मांगों को लेकर जनप्रतिरोध आन्दोलन समिति शाखा सुलतानपुर के बैनर तले नागरिकों ने 10 दिसम्बर को तिकोनिया पार्क में सभा की। सभा की अध्यक्षता डा. रामनाथ मिश्र व समिति के जिला सचिव आर.ए.कोविन्द ने की। सभा को वरिष्ठ पत्रकार जगन्नाथ वर्मा के अलावा रामसुन्दर यादव, सुरेन्द्र मौर्य, वंशीधर वर्मा आदि ने सम्बोधित किया। सभा के बाद नगरपालिका चैयरमैन को ज्ञापन सौंपा गया।

एआईडीएसओ के गौरवमय संघर्ष के 60 वर्ष

सोनीपत (हरियाणा) : 31 दिसम्बर को ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टुडैंट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) का 61 वां स्थापना दिवस एआईडीएसओ के जिला कार्यालय सोनीपत में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉमरेड ईश्वर सिंह राठी ने एआईडीएसओ के संस्थापक कॉमरेड शिवदास घोष के फोटो पर माल्यार्पण करके की। एआईडीएसओ के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष भास्करानंद ने संगठन का झण्डा फहराया और एआईडीएसओ जिंदाबाद और छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए गए।।

उसके बाद ''वर्तमान शैक्षणिक-सांस्कृतिक समस्याएं और उसमें एआईडीएसओ की भूमिका'' विषय पर विचार गोष्ठी हुई जिसमें भास्करानंद ने कहा कि नवजागरण काल के मनीषियों और आजादी आंदोलन के क्रांतिकारियों की जनवादी, धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक शिक्षा की मांग को आजादी के 67 साल बाद भी पूरा नहीं किया जा सका है। क्योंकि यह मांग पूंजीवादी व्यवस्था के लिए खतरा है इसलिए शासक वर्ग इसको पूरा नहीं करना चाहता और इस लूट की व्यवस्था को बनाए रखना चाहता है। 11 सदस्यीय सोनीपत जिला सांगठनिक कमेटी का गठन किया गया। कार्यक्रम का समापन कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन एआईडीएसओ के जिला सचिव प्रवीण नाहरा कर रहे थे।

नागपुर(महाराष्ट्र) : एआईडीएसओ के 61वें स्थापान दिवस के अवसर पर राजीव नगर, हिंगणा रोड पर स्थित शांति निकेतन स्कूल के प्रांगण में विद्यार्थी सभा की गई। सबसे पहले शहीद वेदी पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजली दी गई। एआईडीएसओ के काऊन्सिल मेम्बर विजेन्द्र राजपूत ने अध्यक्षता की। एआईडीएसओ के ऑल इण्डिया कार्यकारिणी सदस्य शिवाशीष प्रहराज मुख्य वक्ता थे। आकाश लोखण्डे, तेजस्वनी काले, पुनम राउत और राकेश बेलपाण्डे ने भी सभा को सम्बोधित किया। शिक्षा पर हो रहे हर तरह के हमलों और अन्याय के खिलाफ एआईडीएसओ के बैनर तले संघर्ष जारी रखने के संकल्प के साथ सभा समाप्त हुई।

जनसमस्याओं को लेकर नागरिक सम्मेलन

बुराड़ी (दिल्ली) : स्कूल, परिवहन, साफ-सफाई, स्वास्थ्य केन्द्र व अन्य जन जीवन की ज्वलंत समस्याओं को लेकर एसयूसीआई(सी) की बुराड़ी इकाई की ओर से 31 दिसम्बर को बुराड़ी चौक पर एक नागरिक सम्मेलन किया गया। सम्मेलन का संचालन पार्टी के बुराड़ी लोकल कमेटी इंचार्ज कॉ. मैनेजर चौरसिया ने किया। पार्टी की दिल्ली राज्य कमेटी के सचिवमण्डल सदस्य कॉ. रमेश शर्मा मुख्य वक्ता थे। सुप्रीम कोर्ट के वकील विजय कुमार के अलावा कॉमरेडस रामबदन, राकेश और निर्मल कुमार ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया। 'निर्भया' की मौत की दूसरी बरसी पर 29 दिसम्बर की शाम को पार्टी की बुराड़ी इकाई द्वारा खुशहाल चौक से 60 फुटा रोड़ तक मौन जुलूस निकाला। इसमें सैकड़ों नागरिकों ने हिस्सा लिया।

बुराड़ी चौक पर एक नागरिक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉ. रमेश शर्मा

किसान संगठन एक मंच पर आये, दिया संयुक्त धरना

महुआ(बिहार) : यूरिया खाद की कालाबाजारी, डीजल-पेट्रोल के दाम घटने पर भी मनमाना यात्री किराया वसूली, पैक्सों में किसानों से धान खरीद में घपलेबाजी, आधार कार्ड के नाम पर लूट-खसोट, महुआ बाजार में अवैध पार्किंग के खिलाफ और श्रीविधि धान की खेती करने वाले किसानों को 50 हजार रुपये मुआवजा देने, निर्धारित दरों पर यूरिया मुहैया कराने आदि मांगों के लिए 26 दिसम्बर को ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन, अखिल भारतीय किसान सभा, भारतीय किसान मंच के संयुक्त बैनर तले महुआ प्रखण्ड-अंचल कार्यालय पर धरना दिया गया। धरना स्थल पर हुई सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉ. ललित कुमार घोष, सीपीआई के पूर्व जिला सचिव कॉ. विश्वनाथ विप्लवी ने संयुक्त रूप से की।

सभा को अखिल भारतीय किसान सभा के नेता कॉ. बिन्देश्वर राय, कॉ. सूरज पासवान, राजेश्वर प्रसाद सिन्हा, ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन के प्रान्तीय नेता कॉ. इन्द्रदेव राय, रामपुकार राय, एआईडीएसओ के नेता कॉ. शिवचन्द्र पासवान, भारतीय किसान मंच के अशोक कुमार सिंह, अमित कुमार यादव, प्रो. रणधीर यादव, संजय कुमार सिंह इत्यादि ने सम्बोधित किया।

अंत में कॉ. ललित कुमार घोष, कॉ. विश्वनाथ विप्लवी, कॉ. बिन्देश्वर राय, रामपुकार राय व अशोक कुमार सिंह को लेकर गठित प्रतिनिधिमण्डल ने 6 सूत्री मांग पत्र बीडीओ महुआ को सौंपा।

बढ़ती अश्लीलता का विरोध

दिल्ली : प्रचार माध्यमों द्वारा फैलाई जा रही अश्लीलता के खिलाफ ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की दिल्ली राज्य कमेटी ने 'दामिनी' की दूसरी मृत्यु वार्षिकी पर 29 दिसम्बर को सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अरूण जेटली को एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया कि महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ते अत्याचारों व अपराधों में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। मीडिया में यौन संबंधों व अपराधों को इस तरह से पेश करने का रुझान दिखाई देता है जिससे जनमानस में कुकृत्यों के प्रति घृणा पैदा होने की बजाय सनसनी पैदा होती है। ज्ञापन में मांग की गई कि अश्लील फिल्मों, टीवी सीरियलों आदि पर रोक लगाई जाए, टीवी को प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया के तहत लाया जाए, कमजोर साइबर कानून की जगह सख्त कानून बनाया जाए, एडवरटाइजिंग स्टेण्डर्ड्स ऑफ इण्डिया को सशक्त बनाया जाए और पोर्नोग्राफी विषयवस्तु के उत्पादन एवं प्रसार को समाप्त करने के लिए सख्त तरीके अपनाये जाएं।

वामपंथी पार्टियों ने मिल कर शहर में निकाला जुलूस

मुरादाबाद(उ.प्र.) : केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय स्तर पर वामपंथी पार्टियों की संयुक्त एकता समिति के आह्वान पर रेलवे स्टेशन से अम्बेडकर पार्क तक जुलूस निकाला गया। जुलूस का नेतृत्व एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के कॉ. हरकिशोर सिंह व कॉ. विजयपाल सिंह, सीपीआई(एमएल) के कॉ. रोहताश राजपूत, सीपीआई(एम) के कॉ. ब्रह्मस्वरूप व जाने माने साहित्यकार माहेश्वर तिवारी ने किया। अम्बेडकर चौक पहुंच कर जुलूस सभा में बदल गया। सभा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. हरकिशोर सिंह ने सम्बोधित किया।

वडोदरा(गुजरात) : केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 16 दिसम्बर को देशव्यापी प्रतिवाद के कार्यक्रम की कड़ी में वडोदरा में एसयूसीआई(सी), सीपीआई, सीपीआई(एम0 की ओर से संयुक्त विरोध प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम में सीपीआई के अशोक कहार, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के तपन दासगुप्ता और सीपीआई(मार्क्सवादी) के नगीनाभाई पटेल और रामकुमार सिंह भी उपस्थित थे।

मुजफ्फरपुर(बिहार) में वामपंथी पार्टियों का संयुक्त धरना

वडोदरा(गुजरात) में वामपंथी पार्टियों का संयुक्त विरोध प्रदर्शन

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing :5 January, 2015

किसानों के संघर्ष की जीत
कृषि भूमि का अधिग्रहण रद्द

रोहतक (हरियाणा): रेवाड़ी में बावल क्षेत्र के 16 गांवों की 3365 एकड़ कृषि भूमि का अधिग्रहण रद्द करने पर एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने खुशी प्रकट की है। पार्टी के राज्य सचिव कॉमरेड सत्यवान ने इसे किसानों के संघर्ष की एक बेहतरीन जीत बताया है।

उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश के संघर्षशील लोगों का यह विश्वास पुष्ट हुआ है कि जनआन्दोलन के बल पर उनकी जायज मांग को मनवाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस सरकार ने लाठी-गोली और काले कानूनों की ताकत का बेजा इस्तेमाल कर किसानों की उपजाऊ कृषि भूमि का जबरन अधिग्रहण करना चाहा था जिसे किसानों ने अपने जोरदार प्रतिरोधी आन्दोलन से विफल कर दिया था। इस संघर्ष में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) और ऑल इण्डिया कृषक खेतमजदूर संगठन ने अग्रणी भूमिका निभाई थी और प्रभावित किसानों को संघर्ष का सही रास्ता दिखाया था। इससे उन्हें भरपूर जनसमर्थन व हौसला मिला। परन्तु सत्ता में आने के बाद अपने चुनावी वादों और कथनी को भूला कर भाजपा की खट्टर सरकार ने इन 16 गांवों की 3365 एकड़ बहुमूल्य कृषि भूमि के अधिग्रहण की कार्रवाई को अन्तिम दौर में आगे बढ़ा दिया था। संघर्षरत किसानों के बीच बैठे कुछ शिखण्डियों द्वारा उठाई गई मुआवजा बढ़ाने की मांग के विपरीत एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने कृषि भूमि के अधिग्रहण पर मुक्कमल रोक लगाने, 3365 एकड़ भूमि अधिग्रहण की चल रही कार्रवाई बंद करने और किसानों को सस्ते खाद-बीज देने, सिंचाई के पर्याप्त इन्तजाम करने, फसलों के लाभकारी दाम देने का अभियान चलाया और किसानों से हर कीमत पर कृषि भूमि को बचाने का आह्वान किया जो रंग लाया।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार शायद किसानों के विद्रोही तेवर भांप गई और अधिग्रहण की कार्रवाई को उसने रद्द करना ही बेहतर समझा। पार्टी ने संघर्षरत किसानों को इस जीत के लिए बधाई दी है।

विरोध के कारण किसानों की जमीन की कुर्की की कार्रवाई स्थगित

लोहारू (हरियाणा) : बैंक द्वारा कर्जवान किसानों की जमीन की कुर्की के खिलाफ ऑल इण्डिया कृषक खेतमजदूर संगठन, किसान सभा और किसान संघर्ष कमेटी आदि किसान संगठनों ने एक मंच पर आकर 29 दिसम्बर को शहर में प्रदर्शन किया, एसडीएम (नागरिक) कार्यालय पर किसानों ने धरना दिया और उन्हें ज्ञापन भी सौंपा गया। किसानों के विरोध के कारण जमीन की कुर्की की कार्रवाई स्थगित कर दी गई।

वहां हुई सभा को ऑल इण्डिया कृषक खेतमजदूर संगठन के राज्य सचिव कॉमरेड विजय कुमार, भिवानी जिला कमेटी सचिव कॉमरेड रोहताश सिंह सैनी, अध्यक्ष कॉमरेड जिले सिंह व अन्य किसान संगठनों के नेताओं ने सम्बोधित किया। ज्ञापन में लोहारू क्षेत्र के कर्जवान किसानों की कृषि भूमि की कुर्की करने की कार्रवाई को भी तत्काल प्रभाव से रद्द करने की मांग खट्टर सरकार व जिला प्रशासन से की गई।

जमीन की कुर्की के खिलाफ लोहारू में सड़कों पर उतरे किसान

असम में नरसंहार की एसयूसीआई(सी) ने की कड़ी निन्दा

असम के विभिन्न जिलों में चल रहे नृशंस हत्याकाण्डों में अब तक लगभग 100 निहत्थे निर्दोष आदिवासी लोग मारे जा चुके हैं। नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट ऑफ बोडोलैण्ड का संविजित नामक एक उग्रवादी गुट 27 दिसम्बर से यह हत्याकाण्ड करता आ रहा है।

इस घटना की घोर निन्दा करते हुए एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 25 दिसम्बर को जारी एक बयान में कहा कि निरीह लोगों पर आतंकवादी संगठन का यह अंधाधुंध हत्याकाण्ड जनता के किसी भी हिस्से के लिए सुखकर नहीं है। बल्कि यह उग्रवादियों के खिलाफ ही बूमरांग का काम करेगा और परिणाम स्वरूप और भी मौत और तबाही लायेगा। इस साम्प्रदायिक दंगे की शुरूआत में ही इसे दबा देने में असम सरकार की पूरी तरह नाकामी और उदासीनता की निन्दा करते हुए कॉमरेड प्रभाष घोष ने आम लोगों की जान-माल की पूर्ण सुरक्षा की गारण्टी देने, मृतकों और घायलों का उचित मुआवजा देने और इस जघन्य अपराध में संलिप्त व्यक्तियों को सख्त सजा देने की मांग की। उन्होंने दंगे-फसाद व लूटमार करने वाली ताकतों को भी इन अमानवीय और बर्बर करतूतों से बाज आने का आग्रह किया ताकि असम में शांति बहाल की जा सके और असम के लोगों के बीच सौहार्द और एकता कायम की जा सके।

दिल्ली : बिजली उद्योग के सार्विक निजीकरण के लक्ष्य से केन्द्र की बीजेपी सरकार की ओर से बिजली कानून 2003 को दोबारा संशोधित करने की पहल के खिलाफ 8 दिसम्बर को जन्तरमन्तर पर बिजली कर्मियों और इंजिनियरों की राष्ट्रीय तालमेल कमेटी के आह्वान पर आयोजिक विरोध सभा में एआईयूटीयूसी की वर्किंग कमेटी के सदस्य और ऑल इण्डिया पावरमैंनन्स फेडरेशन के महासचिव कॉमरेड समर सिन्हा (चित्र में)।

मंच पर मौजूद थे एटक के नेता ए बी वर्धन, सीटू के तपन सेन, इंजिनियर्स फेडरेशन के चेयरमैन शैलेन दूबे सहित दूसरी-दूसरी फेडरेशनों के राष्ट्रीय नेतागण।

कोलकाता : 11 दिसम्बर को 17 वामपंथी पार्टियों के आह्वान पर देश भर में सप्ताहव्यापी प्रतिवाद के कार्यक्रम के हिस्से के तौर कोलकाता में लेनिन की मूर्ति के पास से रानी रासमणि एवेन्यू पर धरनास्थल तक जुलूस निकाला गया। धरने की शुरूआत में ही पुलिस की अव्यवस्था से उत्तेजना पैदा हो गई और बैरिकेड के सामने धक्कमधक्का हुई जिसमें कई वामपंथी कार्यकर्ता घायल हुए। 5 बजे तक धरना चला। धरने में वामपंथी पार्टियों के नेताओं ने वक्तव्य रखे।

तेलंगाना व आंध्र प्रदेश राज्य स्तरीय छात्र धरना-प्रदर्शन

हैदराबाद: एआईडीएसओ द्वारा 23 दिसम्बर को हैदराबाद में छात्रों का एक विशाल धरना दिया गया। छात्र संगठन ने छात्रों के बकाया वजीफे का भुगतान करने, 8वीं कक्षा तक किसी को फेल न करने की नीति और सीसीई की नीति वापस लेने, प्राइवेट विदेशी विश्वविद्यालय बिल वापस लेने, छात्राओं पर होने वाले अत्याचार रोकने, शिक्षा का भगवाकरण बंद करने और स्कूल-कॉलेजों में शिक्षकों के रिक्त पड़े पदों को तुरंत भरने की मांग की।

एसयूसीआई(सी) के तेलगाना व आंध्र प्रदेश राज्य सचिव कॉ. के. श्रीधर मुख्य अतिथि के तौर पर धरने पर आये। उन्होंने अपने भाषण में केन्द्र व राज्य सरकारों के शिक्षा-विरोधी रवैये को दिखाते हुए बीजेपी सरकार के शिक्षा के भगवाकरण की आलोचना की और इसके खिलाफ जोरदार छात्र आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया। एआईडीएसओ के उपाध्यक्ष वी एन राजशेखर, ऑल इण्डिया सेव एज्यूकेशन कमेटी के राज्य कन्वीनर एस गोविंदराजुलू, एआईडीएसओ के राज्य अध्यक्ष डी राघवेन्द्र व सचिव आर गंगाधर ने भी धरने को सम्बोधित किया। संगठन के उपाध्यक्ष पी तेजा ने अध्यक्षता की।

"Print-line
Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."